ISSN:2395-1079 Available online at http://www.gjms.co.in/index.php/sajms
South Asia Journal of Multidisciplinary Studies SAJMS November 2016, Vol. 2, No 10

उच्च शिक्षा का ऐतिहासिक विश्लेषण

डॉ. भावना तिवारी
विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग नवयुग कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय जबलपुर (म.प्र.)

सारांश नालंदा विश्वविद्यालय में चीन, कोरिया, जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया आदि देशों से अध्ययन के लिए विद्यार्थियों के आने के स्पष्ट उल्लेख मिलते हैं। परन्तु दुर्भाग्य से कालान्तर में यह परम्परा नष्ट हो गई तथा आधुनिक विज्ञान व तकनीकी के विकास के साथ–साथ पश्चात्य देश उच्च शिक्षा व अनुसंधान के क्षेत्र में अग्रणी हो गये इसके परिणामस्वरूप भारत में आधुनिक विश्वविद्यालयों की आवश्यकता महसूस की गई। आधुनिक प्रकार की उच्च शिक्षा के आधारशिला ब्रिटिश काल में रखी गई थी। परन्तु भारत वर्ष में उच्च शिक्षा कोई नई बात नहीं थी। प्राचीन काल में गुरूकुलों, आश्रमों तथा बौद्ध संघों में विद्यार्थी कुछ विशेष विषयों का गहन अध्ययन करके उच्च शिक्षा प्राप्त करते थे प्राचीन तथा मध्यकाल के कुछ उच्च शिक्षा केन्द्र अपनी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध थे जिनमें अध्ययन करने के लिए दूर–दूर से विद्यार्थी आया करते थे।

शब्दकोश : गुरूकुलों, आश्रमों, सुसंस्कृत समाज

प्रस्तावना

आधुनिक प्रकार की उच्च शिक्षा के आधारशिला ब्रिटिश काल में रखी गई थी। परन्तु भारत वर्ष में उच्च शिक्षा कोई नई बात नहीं थी। प्राचीन काल में गुरूकुलों, आश्रमों तथा बौद्ध संघों में विद्याथी कुछ विशेष विषयों का गहन अध्ययन करके उच्च शिक्षा प्राप्त करते थे प्राचीन तथा मध्यकाल के कुछ उच्च शिक्षा केन्द्र अपनी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध थे जिनमें अध्ययन करने के लिए दूर–दूर से विद्यार्थी आया करते थे। नालंदा विश्वविद्यालय में चीन, कोरिया, जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया आदि देशों से अध्ययन के लिए विद्यार्थियों के आने के स्पष्ट उल्लेख मिलते ह। परन्तु दुर्भाग्य से कालान्तर में यह परम्परा नष्ट हो गई तथा आधुनिक विज्ञान व तकनीकी के विकास क साथ–साथ पश्चात्य देश उच्च शिक्षा व अनुसंधान के क्षेत्र में अगणी हो गये इसके परिणामस्वरूप भारत में आधुनिक विश्वविद्यालयों की आवश्यकता महसूस की गई।

आधुनिक भारतीय उच्च शिक्षा की आधारशिला 1857 में रखी गई थी। सन् 1854 में वुड के घोषणा पत्र में भारत में विश्वविद्यालय खोलने

की सिफारिश की गई थी जिसके परिणास्वरूप सन् 1857 में कलकत्ता, बम्बई, मद्रास में तीन विश्वविद्यालय खोले गये थे। यद्यपि सन् 1857 में देश में उच्च शिक्षा के लगभग 23 महाविद्यालय विद्यमान थे तथापि उच्च शिक्षा की वास्तविक आधारशिला इन तीन विश्वविद्यालयों की स्थापना के द्वारा ही रखी जानी स्वीकार की जाती है।

सन् 1882 में लाहौर में पंजाब विश्वविद्यालय की स्थापना की गई एवं सन्1887 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना हुई इस प्रकार से बीसवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में उच्च शिक्षा का तीव्र गति से विकास हुआ।

स्वतंत्रता प्राप्ति तक भारत में कुल 20 विश्वविद्यालय यथा – कलकत्ता (1857), मद्रास(1857), इलाहाबाद (1887), बनारस(1916), मैसूर(1916), पटना(1917), उस्मानिया(1918),अलीगढ़(1921),लखनऊ(1921, दिल्ली(1922),नागपुर(1923),आध्रप्रंदेश(1926), अगरा(1927),अन्नामलाई(1929, केरल (1937), उत्कल(1943), सागर(1946), राजस्थान(1947) तथा चंड़ीगढ़(1947) खोल जा चुके थे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत उच्च शिक्षा का विस्तार काफी तेजी से हुआ है। वर्तमान में भारत में 300 से अधिक विश्वविद्यालय है।

20वीं शताब्दी के प्रथम अर्द्धांश में हुये उच्च शिक्षा के विकास का मुख्य उद्देश्य –

1.भारतीयों का बौद्धिक तथा नैतिक विकास करना
2.भारत में यूरापिन साहित्य तथा विज्ञान का प्रसार करना
3.भारतीयों का आर्थिक विकास करना
4.ब्रिटिश शासन की सहायता के लिए भारतीयों को प्रशिक्षित करना।

ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में शिक्षा की स्तरीकृत व्यवस्था व्यावसायिक तथा तकनीकी शिक्षा का विधिवत शिक्षण कार्य इसी दौरान आरंभ हुआ। इंजीनियरिंग तकनीकी शिक्षण संस्थान कृषि कॉलेज आदि अनेक संस्थायें खोली गई।

वास्तव में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था ब्रिटिश कालीन शिक्षा व्यवस्था का ही संशोधित रूप है।

स्वतंत्रता के उपरांत विगत साठ वर्षों में अनुमानित महाविद्यालयों की संख्या 10 गुना अधिक हो गई है।

निष्कर्ष

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अनेक विसंगतियाँ है यह शिक्षा प्रणाली अनुपयोगी, असैद्धांतिक, एकांगी तथा जीवन से असंबंधित है यह छात्रों को आत्मनिर्भर बनाने में असमर्थ है इसका संबध हमारी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से है अतः इस समस्या को दूर करने के लिए सघन सामूहिक प्रयत्नों

की आवश्यकता है। परिवार, समाज, विद्यालय व राज्य सभी मिलकर इस समस्या का समाधान खोज सकते हैं।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों के अंकों पर आधारित है। ज्ञान पर आधारित नहीं है अर्थात् विद्यार्थियों की अंक सूची ही उनकी योग्यता निर्धारित करती है। जबकि भारत की विश्व गुरू वाली छवि ज्ञान पर आधारित रही है।

सुझाव –

वर्तमान शिक्षा प्रणाली सुधार लाकर, परीक्षा प्रणाली के दोशों को समाप्त करके हम योग्य और अनुभव से पूर्ण व्यक्तियों की श्रृंखला तैयार कर सकते है। शिक्षा प्रणाली को सार्थक बनाने के लिए हमें योग्य प्राध्यापकों की आव" यकता है। सभी उच्च शिक्षा संस्थानों में एक ऐसा उपयुक्त वातावरण बनाना आव" यक है जो शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक हो। इसके लिए सर्वप्रथम हमें अपनी शिक्षा प्रणाली को ज्ञान पर आधारित करना होगा व्यवहारिक शिक्षा को महत्वपूर्ण बनाना होगा। विद्यार्थियों के मानस पर ज्ञान अंकित करना होगा जिससे भारत में पीढी दर पीढी सुसंस्कृत समाज का विकसित होता रहे।

संदर्भ ग्रंथ

1. रावत प्यारे लाल, प्राचीन व आधुनिक शिक्षा का इतिहास ; आगरा पब्लिशर्स।
2. तिवारी डॉ. भावना, ''भारतीय संस्कृति की विभव विरासत''; ''प्राचीन भारत में शिक्षा की उपादेयता'', (सेण्डीमन अनुभूति) ; पृ.168, सरूप बुक पब्लिशर्स प्रा.लि. नई दिल्ली।
3. सिंघल महेश चन्द, भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्याऐ ; राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
4. अदावल एस.बी तथा एम उनियाल, भारतीय शिक्षा की समस्यायें तथा प्रवृत्तियाँ; लखनऊ उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
5. कबीर हुमायूँ, स्वतंत्र भारत में शिक्षा;राजपाल एण्ड संस दिल्ली।